अेकताके लिअे

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ | सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला | अंक ४२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १९ दिसम्बर, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

अधिकारियोंके लिअे सवाल

कुछ भाअियोंने मुझे नीचे लिखे सवाल पूछे हैं। अिनमेंसे कितने ही भाअियोंके सवाल तो लम्बे समयसे आया करते हैं। लेकिन पक्की जानकारीके अभावमें मैं अिन सवालोंके बारेमें अपनी राय जाहिर करना टालता रहा। मुझे आशा थी कि सम्बन्धित अधिकारी अपनी ओरसे अिनका खुलासा करेंगे। लेकिन अभी तक कोअी स्पष्ट खुलासा देखनेमें आया नहीं। मैं मानता हूँ कि और अधिक समय तक लोगोंकी शंकाओंका समाधान मुलतवी रखना ठीक नहीं। यदि अधिकारियोंकी ओरसे अिनके जवाब मुझे दिये जायँगे, तो मैं अुन्हें खुशीसे प्रकाशित करूँगा।

१. अुन्होंने गवर्नर जनरलको हर महीने करीब २०,००० रुपयेका जो वेतन मिलता है, अुस पर खास टीका की है। सवाल पूछनेवालोंमेंसे करीब करीब सभीको आश्चर्य तो यह है कि "हमारे देशके सबसे ज्यादा काटछाँट करनेवाले और सादगीसे रहनेवाले नेता"को ही अितनी अूँची पगार क्यों दी जाती है, जिसका बचाव नहीं किया जा सकता? अुन्हें आलीशान महलमें रहनेके लिअे क्यों मजबूर किया जाता है? क्यों अुन्हें अेक बेजरूरी रिसालेके साथ मजबूरन प्रवास करना पड़ता है?

२. अुनकी दूसरी टीका बम्बअीके गवर्नरके वेतन पर है। अैसे तो वे खुद अपनी अिच्छासे अपने मासिक वेतनके रूपमें १०,०००के बदले ५,५०० रुपये लेते हैं। लेकिन मेरा खयाल है कि अभी भी दूसरे गवर्नरोंके मुकाबले अुन्हें २,५०० रुपये ज्यादा मिलते हैं।

३. हिन्दके राजदूतोंके वेतन ३,००० से लेकर १२,००० रुपये मासिक तक हैं। अिसके अलावा परदेशमें रहनेके कारण अुन्हें भत्ता भी मिलता है। कहा जाता है कि वे आदरसत्कारके लिअे की जानेवाली मजलिसोंमें बहुत खर्च करते हैं। अितना ही नहीं, बल्कि अिन मजलिसोंमें शराब भी पिलाअी जाती है। क्या अिन वेतनों और शराबके बचावमें कुछ कहा जा सकता है? क्या अिसका हिन्दकी शराबबन्दीकी नीतिसे मेल बैठता है?

४. जयपुर कांग्रेस अधिवेशनके प्रवेश टिकिटकी कमसे कम कीमत १०) रुपया रखी गअी है। यह हिन्दकी गरीब जनताके लिअे भारी माना जायगा। क्योंकि टिकिटकी दरके अलावा अुसे खाने, रहने, मुसाफिरी करने, प्रदर्शनमें जाने वगैराके दूसरे खर्च भी करने होंगे। टिकिटकी कीमत अूँची होनेके कारण हिन्दके गरीब लोगोंके लिअे तो कांग्रेसका दरवाजा जबरन् बन्द हो जाता है। और अिसलिअे कांग्रेसका यह भव्य अधिवेशन अधिकतर अुन्हीं लोगोंके लिअे सीमित हो जाता है, जिनकी हालत अच्छी है। माना जाता है कि अधिवेशनका खर्च करीब ५० लाख रुपये होगा। यदि आजके रुपयेका मूल्य पहलेके रुपयेके मुकाबले चौथाअी मानें, तो भी अुसका खर्च लगभग १२ से १३ लाख तक माना जायगा। अिससे यह मालूम होता है कि हर साल कांग्रेस मौजशौक, सुखचैन और ठाटबाटकी ओर ज्यादा ज्यादा झुकती जा रही है। हर स्वागत-समिति मानो यही मानती है कि अिस बार अैसा ठाटबाट किया जाय, जिससे पहलेके अधिवेशनका ठाटबाट अिसके सामने मन्दा पड़ जाय। आजकल हिन्द पर कांग्रेसका शासन चल रहा है। अिससे अुसमें यह सब करनेकी ताकत है। लेकिन क्या सचमुच यह अुचित है? क्या अिससे हिन्दको कुछ फायदा होगा? और यदि फायदा होता हो, तो वह किस तरह?

५. यह भी पूछा जाता है कि अुत्तर हिन्दमें अधिवेशन करनेके लिअे कांग्रेसने ठण्ढका मौसम क्यों पसन्द किया? अिस मौसमके कारण आनेवालोंको स्वाभाविक ही ज्यादा खर्च करना होगा। आजके वक्तमें अेक आदमीके पीछे अूनके कपड़े, कम्बल वगैराका खर्च सौ रुपयेसे ज्यादा आता है। फिर दक्षिण हिन्दके भाअियोंको अुत्तर हिन्दकी ठण्ढकी तेजीका ठीक ठीक अन्दाज भी नहीं हो सकता। ज्यादातर तो वे जरूरी साधनोंके बगैर ही आयेंगे और बीमार पड़ेंगे। मार्च या अुसके आसपास कांग्रेसका अधिवेशन करनेका पुराना ठहराव किस कारणसे छोड़ दिया गया है?

मुझे आशा है कि सम्बन्धित अधिकारी अिन सवालोंके बारेमें जिज्ञासा रखनेवाली जनताको तृप्त करेंगे।

बम्बअी, ५-१२-'४८ — **किशोरलाल मशरूवाला**

(गुजरातीसे)

खादीधारियोंके कपड़ेके कूपन

अेक भाअीने नीचेका जो सुझाव दिया है, वह ठीक है:

"पहली जनवरीसे कपड़ेका रेशनिंग शुरू होनेवाला है, और कूपन पद्धतिसे कपड़ा मिलेगा। यह संभव है कि सभी लोग ये कूपन लें। लेकिन जो पूरी तरह खादीधारी होनेका दावा करते हैं, अुन्हें कपड़ेके कूपन सरकारको वापिस कर देने चाहियें; क्योंकि वे मिलका कपड़ा नहीं पहनते।

"कांग्रेसके नेताओं, कार्यकर्ताओं और कमेटियोंको सब खादीधारियोंको सलाह देनी चाहिये कि वे अपने कपड़ेके कूपन सरकारको वापिस कर दें। कूपन लौटा देनेसे काफी कपड़ा बचेगा।"

यही न्याय अुन लोगोंको भी करना चाहिये, जो मिलका कपड़ा तो पहनते हों लेकिन अपने पास बहुतसा कपड़ा रखते हों। अैसा करनेमें शुद्ध न्याय है, अुदारता नहीं।

बम्बअी, ८-१२-'४८ — **कि० मशरूवाला**

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

मिट्टीके घर — ४

पूरी अिमारतके लिअे मिट्टीका अेक तरहका मिश्रण काममें लिया जाय तो बेहतर है। टीपकर जितना काम करना हो, अुसके आकारका पहलेसे हिसाब लगा लेना चाहिये। टिपाअीके कामके हर घनफुटके लिअे खुली या ढीली मिट्टी २ घनफुट और ठोस जमी हुअी मिट्टी १½ घनफुट (मौलिक स्थितिमें) तैयार की जाय। अिस खोदी हुअी मिट्टीको फोड़कर बारीक कर लेना चाहिये; और यदि अेक अिंचके छेदवाली तारकी छलनी, जाली या चद्दरकी छलनीसे छान ली जाय, तो ज्यादा अच्छा हो। जब मिट्टीमें बड़े बड़े रोड़े हों या सख्त और सूखे ढेले हों, जिन्हें भिगोना मुश्किल है, तब अुसे छानना जरूरी हो जाता है। छाननेके बाद यदि जरूरत हो तो रेत और कंकड़ मिला लिये जायँ और अिस तैयार मिट्टीको लगभग ३/४ अिंच मोटी परतोंमें जमीन पर फैलाया जाय और अुस पर पानीके झारेसे अच्छी तरह छिड़काव करके अुसे तर किया जाय। तर करनेके बाद वह मिट्टी फिरसे गूँधी जाय और ढेर लगाकर अुसे मोमकप्पड़ या गीले थैलोंसे ढँक दिया जाय। अिस हालतमें अुसे रातभर या कुछ घण्टे रहने दिया जाय।

टीपी हुअी मिट्टी भारी भरकम होती है, अिसलिअे अुसे अिमारतके जितनी नजदीक हो सके अुतनी नजदीक तैयार करना चाहिये। जब अेक ही मकान बाँधना हो, तो मिट्टी कचरा और टट्टी डालनेके लिअे खोदे जानेवाले गड्ढोंसे ली जा सकती है। लेकिन जब बड़ी बड़ी बस्तियाँ बाँधना हों, तब तो मिट्टीकी ढुलाअी जितनी टाली जा सके, टालना चाहिये। बहुतायतसे और नजदीकसे नजदीक मिट्टी पानेका आसानसे आसान तरीका यह है कि सड़क और गलीको अूपर अूपरसे तीनसे छह फुटकी गहराअी तक खोद लिया जाय और अिस खोदी हुअी मिट्टीको मकान बनानेके काममें लिया जाय। अिस तरीकेके कअी फायदे हैं: मकानका पानी निकालनेके लिअे अच्छी नालियाँ निकल आती हैं, मकानकी कुर्सी अूँची हो जाती है, मकानके आसपास बाड़ा बनानेमें खर्च कम लगता है, मकान बाँधनेके लिअे मिट्टी मकानके पास ही मिल जाती है, वगैरा वगैरा।

टीपी हुअी मिट्टीकी दीवार बनानेका खर्च करीब करीब मजदूरी और मजदूरकी होशियारी पर निर्भर रहता है। जहाँ बगैर पैसेके मजदूर मिल सकते हैं, वहाँ तो परिवारके लिअे बनाये जानेवाले घरोंके लिअे टीपी हुअी मिट्टी आदर्श होती है। बाँधनेका अिससे सस्ता तरीका और कोअी नहीं हो सकता। लेकिन जब यह काम ठेकेदारों या सरकारी महकमोंके मारफत करवाना हो, तब सामान और साँचोंको अुठाने-रखनेके लिअे सावधानीसे योजना बनाना जरूरी है। कारण कि मकान बनानेका कच्चा सामान मुफ्तमें पानेके जो फायदे मिलते हैं, वे अिस हालतमें आसानीसे खोये जा सकते हैं।

अब हम टिपाअीके काममें बरते जानेवाले औजारोंका वर्णन लें। वे बिलकुल सादे होते हैं और गाँवोंमें स्थानीय कारीगरों द्वारा लोहेको छोड़कर दूसरे स्थानीय सामानसे तैयार कराये जा सकते हैं। औजारोंमें कुछ तो मिट्टीको अन्दर दबानेके साँचे होते हैं और दूसरे अूपरसे टीपनेके, जैसे धुरमुस वगैरा।

पुराने धुरमुसकी V आकारकी धार होती है, जिसका कोण ६०° से १२०° तक होता है। और यह दलील दी जाती है कि अिस धक्केसे किनारों परकी मिट्टी दबती है, जिससे ढलाअीके साँचेमें बहुत ही डाटकर गारा भर जाता है। अनुभवसे सिद्ध हुआ है कि सपाट धुरमुससे ज्यादा अच्छे नतीजे निकलते हैं, बशर्ते कि सपाट धरातलके हर वर्ग अिंचका वजन कमसे कम २ रतल हो। ढले हुअे लोहेके या मामूली लोहेके ३×३×३ अिंचके घनाकार टुकड़े यदि १½ फुट व्यासवाले ६ फुट लम्बे डाँड़में बैठा दिये जायँ, तो अुससे अच्छी तरह काम चलता है। अिस तरहके धुरमुसका वजन करीब १५ रतल होगा। जहाँ लोहा न मिल सके, वहाँ सख्त लकड़ीके डंडेसे, जिसका अेक सिरा ३×३ वर्ग अिंचका हो, जिस पर लोहेकी सेमी लगी हो और जिसका वजन काफी हो, काम चल सकेगा।

अिस १५ रतली धुरमुसको घुटने तक अूँचा अुठाकर पटकना चाहिये। जोरसे और अेक सरीखा पटकना बहुत महत्व रखता है। जिससे दीवारमें कच्ची जगह नहीं रह पाती। टिपाअीमें जितनी भी कसर रखी जायगी, अुतनी ही दीवार कमजोर बनेगी; जब कि सावधानीसे काम करने पर वह सख्त और पक्की बनेगी।

(अंग्रेजीसे) मॉरिस फ्रिडमॅन

ओहदेका नशा

हमारी केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारोंके दफ्तरोंमें जिन लोगोंके हाथमें हाल ही सत्ता आअी है, अुनमेंसे बहुतोंको ओहदोंका नशा चढ़ गया है। अिस सम्बन्धमें मैं अुस बातको यहाँ देना पसन्द करूँगा, जो गांधीजीने मुझे कअी बरस पहले कही थी। वह १८ फरवरी, १९४० का दिन था। गांधीजी दो दिनके लिअे शान्तिनिकेतन आये थे। शामको रोजकी तरह जब वे घूमने निकले, तब मैं सौभाग्यसे अुनके साथ था। हमारे 'श्यामली' लौटनेके बाद ही, जहाँ अुन्हें गुरुदेव रवीन्द्रनाथने ठहराया था, जब वे शामकी प्रार्थनाके लिअे तैयार हो रहे थे, अुन्होंने अेकाअेक कहा — "अगर मुझे यह मालूम होता कि पदग्रहण हमारे बहुतसे अच्छे कार्यकर्ताओंको नीचे गिरा देगा, तो मैंने कभी अुसकी सलाह न दी होती।" मैंने अुस समय अुनका चेहरा देखा था। वह बहुत ज्यादा भीतरी वेदनासे कठोर हो गया था।

मैं नहीं जानता कि अुनके दिमागमें अैसी कौनसी बात घुट रही थी, जिससे अेकाअेक अुनके मुँहसे ये शब्द निकल गये। लेकिन घूमते समय वे बिलकुल खामोश थे। अिसपरसे मैं अिस नतीजे पर पहुँचा कि घूमते समय अुनके मनमें जरूर भारी विचार-मन्थन चल रहा होगा।

जो कुछ भी हो, हमें ताज्जुब तो अुस बात या प्रक्रियासे होता है, जो अपनी अिच्छासे बने हुअे कल तकके जनताके सेवकको, मानो अेक ही रातमें, आजका 'देवता' बना देती है। अैसा लगता है कि अैसा सेवक सत्ताके पद पर पहुँचते ही आध्यात्मिक ताकतके बिना, अपने अहंको पदके साथ मिलाकर अेक रूप कर देनेके लालचको रोक नहीं सकता, ताकि अुसका अहं दिनों दिन ज्यादा बढ़ सके। नतीजा यह होता है कि अुसका दृष्टिकोण और रुख अेकदम बदल जाता है। और सत्ता हाथमें आनेके बाद जो कोअी अुसके सम्पर्कमें आता है, वह अुसकी सत्ताकी अभिलाषाका शिकार बन जाता है। और फिर अुसके व्यक्तित्व और दूसरोंके व्यक्तित्वके बीच कभी न खतम होनेवाली छिपी लड़ाअी शुरू होती है।

यह व्यक्तित्व सिर्फ सच्चे आदमीकी अेक निशानी भर है। अिसलिअे जब व्यक्तित्व व्यक्तित्वके बीच घोर लड़ाअी चलती है, तो सच्चा आदमी गायब हो जाता है। दूसरे शब्दोंमें, पद पानेवाला आदमी भावुक और हमदर्द अिन्सान बने रहनेके बजाय अुस कुर्सी या गद्दीकी तरह जड़ और कठोर ही ज्यादा बन जाता है, जिसका वह अुपयोग करता है।

अिस 'बिगाड़ या गिरावट'का अिलाज क्या है? अिसका अिलाज यह है कि व्यक्तित्व नामकी धोखेभरी और थोड़े दिनकी चीजके बनिस्बत सच्चे आदमीके गुणोंको बढ़ाया जाय। जिससे अुसमें ओहदेको अपना स्वार्थ पूरा करनेका साधन माननेके बजाय — जैसा कि दुर्भाग्यसे अक्सर होता है — ज्यादा बड़ी सेवाका साधन माननेकी योग्यता पैदा होगी। अगर वह सिर्फ अिस सचाअीको समझ ले कि "काम करनेवाला मर जाता है लेकिन अुसका काम जिन्दा रहता है", तो वह अैसे जालोंमें फँसनेसे बच जायगा, जो सत्ताका भोजन करनेवाला अुसका व्यक्तित्व अनिवार्य रूपसे अुसके लिअे रचता है। तब "हर तरहकी सत्ता आदमीको बिगाड़ देती है" अिस आम कहावतकी जगह यह बनाया जानेवाला आदर्श ले लेगा कि "सत्ता आदमीको अूँचा अुठाती है"। क्योंकि हर तरहकी सत्ता भी शान्तिकी तरह आखिर अीश्वरका ही अेक पहलू है।

(अंग्रेजीसे) औ॰ अेम॰

www.vinoba.in

तामिलनाडमें गांधीजीके अुपदेशोंका अमल

[श्री सत्यन्‌ने तामिलनाड्के अेक आश्रमका मुआअिना किया था, जिसका बयान अुन्होंने मेरे पास भेजा है। वह सच्चा है, अैसा विश्वास रखते हुअे मैं अुसे यहाँ देता हूँ। — कि० मशरूवाला]

"तामिलनाड्में अैसी बहुत-सी संस्थायें हैं, जहाँ कार्यकर्ता गांधीजीके अुपदेशों पर अमल करनेकी कोशिश करते हैं। अैसी अेक संस्था कल्लुपट्टीमें है, जिसका नाम गांधी-निकेतन है। कल्लुपट्टी अढ़ाअी हजारकी बस्तीवाला अेक छोटा-सा गाँव है। वह मदुरासे सातुपुर जानेवाली मोटरके रास्ते पर मदुरासे लगभग पच्चीस मील पर है। श्रीविल्लीपुर जानेवाली मोटर भी अिसी रास्ते जाती है। अिस तरह कल्लुपट्टी रेलसे बहुत दूर है और शहरके असरसे बचा हुआ है।

"गांधी-निकेतन आश्रमकी स्थापना अथक काम करनेवाले मूक सेवक श्री वेंकटाचलपतिने १९४० में की थी। अिस संस्थाकी सफलता ज्यादातर अुन्हींके कारण है। यह संस्था शुरूसे ही बाहरी मददकी आशा रखे बिना स्वतंत्र रूपसे अपना काम चलाती रही है। जिन लोगोंका गांधीजी पर विश्वास है और जो अुनके रचनात्मक कार्यक्रमका अपने जीवनमें अमल करना चाहते हैं, अैसे कुछ कार्यकर्ता श्री वेंकटाचलपतिके साथ अिस काममें शामिल हुअे थे। वेंकटाचलपति खुद सत्ताकी राजनीतिसे दूर रहकर आश्रममें ही रहते थे। अुनके अिस हिम्मतभरे काममें अुनके परिवारने भी साथ दिया। आज दूसरे कामोंके कारण वे आश्रममें नहीं रह सकते, फिर भी वे संस्थाके विकासकी तरफ पूरा पूरा ध्यान देते हैं और अुसकी फिकर रखते हैं। गांधीजीके पक्के अनुयायी श्री आर० गुरुस्वामी अिस आश्रममें सबसे पहले आये। वे व्यवस्था करनेमें काफी होशियार हैं, अिसलिअे अुन्हें आश्रमका व्यवस्थापक बनाया गया है। अेक दूसरे गुरुस्वामी कोअिलपट्टीके हैं। वे चमड़ेके काममें होशियार हैं। अुनके भाअी श्री रुद्रप्पास्वामी भी आश्रमके मेम्बर हैं। अिस समय आश्रममें कार्यकर्ताओंका अच्छा मण्डल काम कर रहा है। रचनात्मक कामकी अलग अलग बातोंके लिअे आश्रममें कार्यकर्ता तैयार करके अलग अलग स्थानोंमें भेजे जाते हैं। अच्छे कार्यकर्ता अिकट्ठे करने और अुन्हें तालीम देकर देशकी मूक सेवामें खुदको अर्पण करनेवाले बना देनेकी जो शक्ति श्री वेंकटाचलपतिमें है, वह लोगों पर अपना असर डाले बिना नहीं रहती। आश्रममें अेक बार आनेवालेको भी अिस हकीकतका पता लग ही जाता है।

"आश्रमने सबसे पहले खादीका काम हाथमें लिया। संस्थाके रोजाना कार्यक्रममें कपास लोढ़ने, पींजने, कातने और बुननेका काम शामिल किया गया है। आश्रमके आसपासके गाँवोंमें गरीबी साफ मालूम पड़ जाती है। गांधीजीके आनेसे पहले भी यहाँ चरखा चलता था। अुसे फिरसे जिन्दा करनेका श्रेय श्री वेंकटाचलपति और अुनके साथियोंको है। आश्रमसे चार मील पर बसा हुआ अम्मापट्टी गाँव चरखा-संघका अच्छेसे अच्छा अुत्पादनकेन्द्र माना जाता है।

"कातनेका सरंजाम बनानेके लिअे आश्रम छोटे पैमानेपर अेक अच्छा कारखाना चलाता है। अुसमें चरखे, तकली, पींजन और दूसरा सरंजाम तैयार किया जाता है।

"आश्रमकी मददसे गाँवके लोग सहकारी ढंगसे अेक गोशाला चलाते हैं। वहाँसे गाँववालोंको जितना चाहिये अुतना गायका दूध, मक्खन और घी मिल जाता है। दूर दूरके गाँवोंने भी अैसी गोशालायें शुरू की हैं।

"वर्धाके गोसेवा चर्मालयकी तरह यहाँ भी अेक चर्मालय गांधी पद्धतिसे चलाया जाता है। अुसमें कच्चे चमड़ेको पकाकर अुसके जूते, चप्पल, पेटी, पाकिट वगैरा चीजें आश्रममें ही बनाअी जाती हैं। तामिलनाड्में यह अपने ढंगका अेक ही चर्मालय है।

"आश्रममें बुनियादी तालीमकी अेक शाला चलती है। अुसका संचालन श्री श्रीनिवासन करते हैं। अुन्होंने वर्धा शिक्षाकी तालीम ली है और वे कुशल और शक्तिशाली शिक्षक हैं। यह शाला पिछले तीन बरससे चल रही है। अुसमें तीन वर्ग हैं और हर वर्गमें विद्यार्थियोंकी तादाद पच्चीससे अूपर है। तीसरे वर्गमें पचास विद्यार्थी हैं, अिसलिअे अुसके दो हिस्से करके दो शिक्षकोंको काम सौंपा गया है। यह शाला और नअी शिक्षा कितनी लोकप्रिय है, यह बात विद्यार्थियोंकी तादादसे आसानीसे समझी जा सकती है। अिन विद्यार्थियोंको अच्छे कपड़े या पूरी खुराक नहीं मिलती, फिर भी वे तन्दुरुस्त, साफ-सुथरे, खुश और फुर्तीले दिखाअी देते हैं। वे शालाके बगीचेमें जो कुछ बोते हैं, अुसमेंसे अुतरनेवाली पाक अपने घर ले जाते हैं। हर वर्गके लड़के नया नया जाननेकी अिच्छा रखते हैं और आश्रममें आनेवाले लोगोंसे अपना ज्ञान बढ़ानेके अिरादेसे तरह तरहके सवाल पूछते हैं। अिस बातमें यह शाला बेजोड़ है। पहले वर्गके विद्यार्थी दो घंटे अुद्योगकाम करते हैं और बाकीके विद्यार्थी अुसमें ढाअी घंटे देते हैं। जरूरतके मुताबिक वे सूत कातते और अुसे दुबटा करते हैं। तीसरे वर्गकी जुलाअीसे सितम्बर तकके तीन महीनोंकी आमदनी रु० १०१-१२-६ हुअी है। पिछले साल अिन विद्यार्थियोंने दूसरे वर्गमें रु० १९० कमाये थे। अिस परसे साबित होता है कि बुनियादी तालीमकी शाला गंभीरता और सच्चे दिलसे अुद्योग करे, तो वह स्वावलम्बी बन सकती है।

"आश्रममें मधुमक्खियाँ पालनेका अुद्योग भी चलता है और अिस अुद्योगके पूरे पूरे विकासका वहाँ मौका है। आश्रममें हाथकुटे चावलोंका ही अिस्तेमाल किया जाता है। आश्रमके व्यवस्थापक श्री गुरुस्वामी खास करके गाँववालोंके लिअे 'ग्रामराज्य' नामका अेक तामिल मासिक पत्र चलाते हैं। अुसमें रचनात्मक कामके अलग अलग पहलुओंको समझानेवाले लेख दिये जाते हैं। अिस मासिकमें खास तौर पर गांधीजीके अुपदेशोंको अपने जीवनमें अुतारनेवाले तामिलनाड्के अच्छेसे अच्छे कार्यकर्ताओंके लेख आते हैं।

"आश्रमका वातावरण सुन्दर है और शालाके बच्चों तथा तालीम लेनेवाले कार्यकर्ताओं पर अुसका बड़ा अच्छा असर पड़ता है। रसोअीसे लेकर झाड़ू लगाने तकका सारा काम सब मिलकर हाथसे ही कर लेते हैं। समय और अनुशासनका पूरा पूरा पालन किया जाता है और आश्रमका हर कार्यक्रम व्यवस्थित होता है। यह व्यवस्था अूपरसे लादी हुअी नहीं, बल्कि अपने आप खिली हुअी है। आश्रममें कोअी अैसा नौकर नहीं, जिसे तनख्वाह दी जाती हो।

"बहुत सम्भव है यह संस्था तामिलनाड्में देशके बहुतसे नौजवानोंको गांधीवादकी तालीम देनेवाला मुख्य गांधी-आश्रम बन जाय।"

(अंग्रेजीसे)

सयानी कन्यासे

लेखक: नरहरि परीख; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी
कीमत १-०-० डाकखर्च ०-२-०

महादेवभाअीकी डायरी

[पहला भाग]

संपादक: नरहरि परीख; अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ५-०-० डाकखर्च ०-१२-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१९ दिसम्बर १९४८

अेकताके लिअे

पिछली फरवरीमें जब अिस सवाल पर चर्चा हुआी कि 'हरिजन' चालू रखा जाय या नहीं, तो मैंने अुसे बन्द कर देने और अेक फर्कके साथ बहुत कुछ अुन्हीं अुसूलोंके आधार पर दूसरा पत्र चलानेका जोरदार समर्थन किया था। वह फर्क अितना ही कि नया पत्र हमारी अपनी ही कोशिशोंसे चले; अुसके लिअे अुस छोटेसे पत्रके नाम, शैली और यशका अुपयोग न किया जाय, जिसका बापूके साथ पूरा पूरा सम्बन्ध था और जो बापूके लिअे अितना पवित्र बन गया था। अुस समय मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि 'हरिजन' अपने असल रूपमें चालू रहे। और जब अुसे चालू रखनेका फैसला किया गया, तो मैं अपने मनको अुसके लिअे कुछ लिखनेको राजी न कर सकी। बरसों तक 'हरिजन'में छपनेवाला अेक अेक शब्द बापूकी नजरसे गुजरता, और हममेंसे किसीकी — यहाँ तक कि महादेवकी भी — रचना बापूकी सम्पादन करनेवाली कलमकी चोटसे नहीं बच पाती थी। अक्सर मैं बापूके पास बैठती और अुन्हें 'हरिजन'के लिअे दूसरोंके लिखे लेखोंको शुरूसे आखिर तक जाँचते देखती थी। अैसे समय वे पूरी तरह अुसी काममें अपना मन लगा देते थे। अुन्हें कभी दुबारा पढ़ने या सोचने-विचारनेकी जरूरत नहीं पड़ती थी। वे लेखको पढ़ते जाते और चुपचाप शब्दों, वाक्यों या पूरेके पूरे पैरोंको अपनी कलमसे काटते जाते और अुनकी जगह अपने अेक या दो शब्द लिख देते थे। कभी कभी महादेव भी अुनके पास बैठे होते और अपनी ही रचनाओं पर किये जानेवाले अिस ऑपरेशनको ध्यानसे देखते रहते। कुछ पल अैसे भी होते थे, जब महादेव अपनी रचनाके अेक वाक्यके बाद दूसरे वाक्य पर बापूकी कठोर कलमको चलते देखते और अुनके मुँहसे आश्चर्य या थोड़ी निराशाकी धीमी आवाज निकल जाती। और जब बापू काटे हुअे वाक्योंकी जगह अपने सुधार लिखना शुरू करते, तो महादेव बड़ीसे बड़ी दिलचस्पीसे यह देखनेके लिअे आगे झुक जाते कि बापू अैसा क्या लिखेंगे, जो काटे हुअे पूरे पैरेके भावोंको थोड़े शब्दोंमें जाहिर कर सकेगा।

अैसे विचारों और पवित्र यादोंने मुझे अभी तक 'हरिजन'के लिअे कुछ लिखनेसे रोका, हालाँकि किशोरलालभाअी जैसे पुराने दोस्तके काममें मदद करनेसे मुझे बड़ा आनन्द होता। अुन्होंने बहुत खराब तन्दुरुस्तीसे पैदा होनेवाली भारी रुकावटोंका सामना करते हुअे बहादुरीसे 'हरिजन' पत्रोंके सम्पादनका बोझ अपने कमजोर लेकिन अथक कन्धों पर अुठाया है। लेकिन हालमें जब मैं पशुलोकसे बाहर निकली और करीब १० दिन दिल्लीमें रही, तो यह जानकर मैं घबरा गअी कि हमारे बीच आपसी सम्पर्क और अेकताका कितना अभाव है। कोअी भी मुझे यह नहीं बता सका कि विनोबा कहाँ गये हैं, कुमारप्पा कहाँ गायब हो गये हैं। कृपलानीका किसीको पता नहीं था, प्यारेलालका कार्यक्रम किसीको मालूम नहीं था। अिसी तरह दूसरे साथियोंके बारेमें भी था; और अिस प्रकार हम लोगोंकी तरह हमारे काम भी अेक दूसरेसे अलग पड़ते मालूम होते हैं। बापू ही अेक केन्द्रीय शक्ति थे, जिनके शरीरके आसपास हम सब समान भक्तिसे पहले अिकट्ठे होते थे। बापू सदेह अब हमारे बीच नहीं रहे, अिसलिअे क्या हम पहलेकी अेकता खो देंगे? यह सबसे बड़े दुःखकी बात होगी, क्योंकि हमारे बीच अुद्देश्य और कार्यकी अेकता साध कर ही हम बापूका सबसे पहला और सबसे बड़ा स्मारक खड़ा कर सकते हैं। कुदरती तौर पर हमारा साप्ताहिक पत्र हमारे विचारोंके मेलकी जगह होनी चाहिये, और अिसी कारण अूपर बताअी हुअी भावनाओंके होते हुअे भी मैं 'हरिजन'के कालमोंमें फिरसे लिखनेकी जरूरत महसूस करती हूँ।

आज देशमें चारों तरफ अैसे अुसूलों और नीतियोंका बोलबाला है, जिनकी हमने पुराने दिनोंमें आज़ाद हिन्दके लिअे कभी कल्पना भी नहीं की थी। प्रतिक्रिया और भ्रमकी अिस गड़बड़ीमें हममेंसे जो गांधीजीके अुपदेशों और आदर्शोंमें **विश्वास करते हैं**, अुन्हें आखिर तक अेक साथ बने रहना चाहिये। हम अुन मल्लाहोंकी तरह हैं जो जहाजके चट्टानसे टकराकर चूरचूर हो जानेके कारण भयंकर तूफानमें लकड़ीके तख्ते पर बैठे हुअे हैं और अपने हाथमें अेक अमूल्य खजाना पकड़े हुअे हैं। लेकिन अूपर आकाशमें अेक तारा चमक रहा है, जिसकी दिशामें हमारा तख्ता बढ़ रहा है; और जब तक हम सब मजबूतीसे अुसे पकड़े रहेंगे, तब तक न तो समुद्रकी लहरें हमें डुबा सकतीं और न बड़ा खतरा ही हमें अपने अमूल्य खजानेके — सत्य शब्दके — साथ बन्दरगाह पर पहुँचनेसे रोक सकता है।

पशुलोक, २–१२–'४८ **मीराबहन**

[मुझे यकीन है कि 'हरिजन'के पाठक मीराबहनके लौटनेका स्वागत करेंगे। — कि० मशरूवाला]

(अंग्रेजीसे)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अिस संस्थाके मित्रोंकी ओरसे अभी अभी कुछ साहित्य मुझे मिला है। अुन्होंने बिनती की है कि मैं अिस संस्थाको कानूनी करार देनेके लिअे 'हरिजन' पत्रोंमें सिफारिश करूँ। मैं अिस सम्बन्धमें 'हरिजन'में कुछ नहीं लिखना चाहता था। क्योंकि मेरे पास अितना पुरावा नहीं है कि मैं सरकारी नीतिको अयोग्य ठहरा सकूँ।

पर मालूम होता है कि गुजरातमें अिस संघके साथ सहानुभूति रखनेवाले कितने ही भाअी अिसके पक्षमें काम कर रहे हैं। अिस हालतमें मेरे लिअे अपनी राय जाहिर कर देना ही ठीक है।

मुझे अफसोसके साथ कहना चाहिये कि मैं अिस संघ और अिसके मेम्बरोंके हेतुओंकी शुद्धता और अुदारताको शंका भरी नजरसे देखता हूँ। अैसा नहीं कि यह शंका गांधीजीके खूनके बाद हुअी हो, वह तो १९४० से ही है। १९४०–४२की जेलमें कितने ही मराठी मासिकोंमें अैसे लेख मेरे पढ़नेमें आये, जिनमें अिस संघके दोनों पक्षोंकी चर्चा होती थी। वर्धामें भी अिस संघकी प्रवृत्तिके बारेमें मुझे कभी कभी जानकारी मिला करती थी। अुस परसे मेरी शंका मजबूत ही हुअी है। 'हिन्दुत्वके लिअे प्रेम और किसीसे द्वेष नहीं' यही अिसका सूत्र बताया जाता है। संघके बारेमें मेरी राय यह है कि अुसके अिस सूत्रके आखिरी हिस्सेमें सचाअी नहीं है। मुसलमानोंके लिअे संघवालोंके मनमें निश्चित ही द्वेष और घृणा है।

१९४४ की जेलसे छूटनेके बाद मेरे कितने ही मित्रोंने मुझे अिस संस्थाकी ओर खींचनेकी कोशिश की थी। मैंने कितने ही प्रिय मित्रोंको अिस ओर खिंचते देखा। मैंने अुन्हें सावधान करके बचानेका प्रयत्न किया, लेकिन अुन्हें मेरी राय बहुत अच्छी नहीं मालूम हुअी। आज तो वे भी मेरी ही रायके हैं और पहले बताअी हुअी अपनी सहानुभूतिके लिअे अुन्हें अफसोस भी होता है। अैसी हालतमें मैं अिस संघकी वकालत करनेमें असमर्थ हूँ।

बम्बअी, ६–१२–'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**

(गुजरातीसे)

जन्मदिन

मेरे विचारसे जन्मदिन मनाना बच्चोंका ही काम समझा जाय, तो अच्छा हो। क्योंकि अुनके लिअे जन्म सचमुच दिलचस्पी भरा रहस्य होता है। मेरी अुमरके आदमियोंके लिअे तो कामका ही महत्व है, न कि जन्मकी तारीखका।

(अंग्रेजीसे) **च० राजगोपालाचार्य**

www.vinoba.in

मेवोंके सवालका फैसला

[नुहू (गुड़गाँव) में मेव लोगोंके सामने आचार्य विनोबाने ७–१०–'४८ को नीचेका भाषण दिया ।]

आप लोग काफी देरसे मेरा अिन्तजार कर रहे हैं, पर जो देरी हुअी है, वह आपके ही कामके लिअे हुअी है । आज सबेरे श्री त्रिलोकसिंहजीसे मेरी काफी बातें हुअी हैं और आप लोगोंको फिरसे बसानेके बारेमें जो तकलीफें या रुकावटें मालूम हुअी थीं, वे हमारी बातचीतके दौरानमें सब दूर हो गयी हैं ।

भाअियो, जब अंग्रेजोंका राज्य था, तो वे लोग अपने आपको जनताका मालिक समझते थे । पर अब चूँकि स्वराज्य आ गया है, ये अधिकारी लोग आपके सेवक हैं और आप यहाँके बादशाह हैं । अगर आप लोग मुल्कको अपना वतन मानेंगे, अिसके लिअे मरनेको तैयार रहेंगे, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको किसी भी तरहकी तकलीफ नहीं होगी । आपके साथ वैसा ही बर्ताव किया जावेगा, जैसा कि हिन्दुस्तानके दूसरे सब लोगोंके साथ किया जाता है । सरकार चाहती है कि आपकी तकलीफें दूर हों और आप लोग फिरसे अच्छी तरह बस जायँ ।

आपकी जो खास तकलीफें हैं, अुनमें मुख्य तो यह है कि जमीनें लेते वक्त आपको कुछ रकम पेशगी देनी पड़ती है । लेकिन चूँकि यह देखा गया है कि अैसी रकम देना आपके लिअे मुमकिन नहीं है, अिसलिअे तय किया गया है कि आपको **बिना पेशगी लिये जमीनें दे दी जायँ** । अब आपको पैसा नहीं देना पड़ेगा । आप लोग अपनी जमीनें फौरन ले लेवें और काममें लग जायँ ।

दूसरी आपकी शिकायत यह थी कि मुसलमानोंमें मेवोंके सिवा जो गैरमेव हैं, जैसे खानजादा, सैयद आदि, अुनको भी बसाया जाय । पर यह जो योजना बनी है वह तो सिर्फ मेव लोगोंके लिअे ही बनी है । गैरमेव मुसलमानोंके लिअे दूसरी योजना है और अुन सब मुसलमानोंको भी बसाया जायगा ।

लोगोंकी शिकायत है कि जो जमीनें मेव लोगोंको दी जानी चाहियें थीं, वे अब भी शरणार्थियोंको दी जा रही हैं । अगर अैसा हुआ है तो अब आगे अैसा नहीं होगा और अगर मेवोंके लिअे रखी हुअी जमीनोंमेंसे कोअी जमीन शरणार्थियोंको दी गअी है, तो बदलेमें मेवोंको दूसरी जमीन दी जायगी । सरकार जितनी जिम्मेदारी शरणार्थियोंके बारेमें महसूस करती है, अुतनी ही आप लोगोंके बारेमें भी ।

पलवल वगैरामें आप लोगोंके जो मकान पड़े हैं, वे आपको मिल जावेंगे । अुसमें कोअी खास कठिनाअी नहीं होगी ।

और भी जो तकलीफें आपकी होंगी, अुन्हें यहाँके अधिकारी दूर करनेकी कोशिश करेंगे ।

अेक जमाना हमारे मुल्कमें अैसा आया कि हिन्दू-मुसलमान दोनों पागल हो गये । जब काफी नुकसान हो चुका, तो दोनों सोचने लगे । दोनोंकी अकल, जो गुम हो गयी थी, ठीक हो गअी । अब हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान हमारे भाअी हैं । मुसलमान कहते थे कि हम पाकिस्तान जायँगे । न जाने वहाँ क्या मेवा मिलनेवाला था? मेवा वगैरह वहाँ तो कुछ था नहीं, क्योंकि ये मेव तो यहीं जो हैं । मुसलमान यह समझ गये ।

मुझे यह बताया गया है कि पटवारी वगैरा रिश्वत लेते हैं । यह सुनकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ । लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर रिश्वतखोरी चलती है, तो न सिर्फ लेनेवाला बल्कि देनेवाला भी जहन्नममें जाता है । जो रिश्वत देकर अपना काम निकालता है, वही तो रिश्वत लेनेवालेको मौका देता है । अिसलिअे पापी दोनों हैं । बड़े बड़े लोग भी रिश्वत देकर अपना काम निकालते हैं । लेकिन आपको अिस पापसे फारिग होना है ।

मुझे किसीने बताया कि मेव जरायम पेशा जैसे हैं । लेकिन मैंने कहा कि मैं अिस बातको नहीं मानता । आखिर मेव किसान हैं । किसान हर वक्त भगवानको याद करता है । बारिशके न होनेपर वह कमिश्नरके पास नहीं जाता । भगवानकी ही शरण लेता है, क्योंकि वही रिजक देनेवाला है । अिसलिअे किसानका तो अल्लाहसे रिश्ता है । अैसे लोग जरायम पेशा नहीं हो सकते । मुझे यकीन है कि मैंने अुस भाअीसे जो कुछ कहा अुसकी आप अपने बरतावसे तसदीक करेंगे और खेतीमें जुट जायँगे ।

[अेक भाअी : महाराज धरती मिले, तब तो तसदीक होवे ।]

यह भाअी ठीक कहता है । अगर आप लोगोंको पहले ही जमीन मिल जाती, तो जो सवाल अिस भाअीने अुठाया है वह न अुठता । मैंने बहुत कोशिश की कि पिछले मअी मासमें ही आप लोगोंको जमीनें मिल जायँ । परंतु सरकारकी तो मीटिंग हुआ करती है । और जब अेक मीटिंगमें काम खतम नहीं होता, तो दूसरी मीटिंग होती है और अिस तरह देरी होती रहती है । लेकिन बरसात मीटिंगके लिअे रुकती नहीं । अीश्वर अपना काम वक्त पर करता ही रहता है । अिसलिअे जमीनें देरसे मिलनेमें अगर किसीका कसूर है, तो हम लोगोंका है, आप लोगोंका नहीं । खैर आपको खेतोंमें मेहनत करके यह साबित कर दिखाना होगा ।

[अेक आवाज : हाँ, साबित कर दिखायेंगे ।]

बहुत अच्छा । मुझे विश्वास है कि आप साबित कर दिखायेंगे । आपकी बड़ी बड़ी शिकायतें तो मैंने सुन लीं हैं; और अुनके बारेमें जो कुछ फैसला हुआ है, वह भी मैंने आपको बता दिया है । पर अिसके अलावा भी आपकी जो छोटी-मोटी शिकायतें हों, आप यहाँके अफसरोंसे कहें । वे आप लोगोंकी सेवाके लिअे ही हैं । अगर किसी वजहसे वहाँ सुनवाअी न हुअी, तो श्री सत्यम् भाअी मेरी तरफसे आप लोगोंके बीच पिछले ६ महीनोंसे सेवा कर ही रहे हैं । वे आपके खादिम हैं । वे अधिकारियोंके सामने भी सिर झुकायेंगे और आपके सामने भी । लेकिन न तो वे अधिकारियोंसे डरेंगे और न आपसे । अेक बात कह दूँ । आप जो बात कहें, वह बढ़ाचढ़ाकर न कहें । कुछ लोग समझते हैं कि बढ़ाचढ़ाकर बात कहनेसे ज्यादा असर होता है, लेकिन यह खयाल गलत है । किसानके मुँहसे तो बात बढ़ाचढ़ाकर निकलनी ही नहीं चाहिये । बादमें तहकीकात होती है और असलियतका पता चल जाता है । फिर आपको जलील होना पड़ता है । अिसलिअे जो बात जैसी हो, वैसी ही कहनी चाहिये; और अगर दो आना हो तो पौने दो आने बतानी चाहिये, पर सवा दो आने नहीं ।

अब मैं अधिकारियोंसे भी अेक प्रार्थना करूँगा । जैसा मैं आप लोगोंका सेवक हूँ, वैसा ही अुनका भी हूँ । आज अेक बरस हो गया, ये लोग अिस तरह भटक रहे हैं और परेशान हैं । जिन्दे हैं, यह तो भगवानकी कृपा है । यहाँकी खेती ये लोग नहीं करेंगे, तो दूसरा कोअी करनेवाला नहीं है । हमारी सरकार चाहती है कि सब मुसलमानोंको ठीकसे बसाया जाय । अुसकी अिस अिच्छाको यहाँके अफसर लोग पूरी कर दिखायेंगे, तो पुरानी दुखदाअी बातें सहज ही भुलाअी जा सकेंगी । हिन्दुस्तानके लोगोंमें यह खूबी है । वे नसीबको पहचानते हैं और अुसी पर सब कुछ छोड़कर जो कुछ होता है अुसे भुला देते हैं ।

आखिरमें अेक बात और । जितनी वकालत आपकी (मेवोंकी) तरफसे हो सकती थी, मैंने की है और सदा करनेके लिअे तैयार हूँ । कुरान शरीफ कहता है : "बश्शिरिस्साबिरीन" — सब्र करनेवालेको खुशखबरी सुनाओ । अिसलिअे आप लोग सब्र रखियेगा । आपको जरूर खुशखबरी सुनाअी जायगी ।

दा० सुं०

www.vinoba.in

हिन्दकी आज़ादीकी रक्षाके लिअे कुछ सुझाव

प्रो० अेस० आर० भागवत पूनामें ग्रामसुधारके लिअे बड़ा काम कर रहे हैं। अुन्होंने हिन्दकी आज़ादीको बचानेके लिअे कुछ सुझाव पेश किये हैं, जो संक्षेपमें नीचे दिये जाते हैं :

१. "हिन्दको अपने सारे कुदरती साधनों और शक्तिके साधनोंको सावधानीसे सुरक्षित रखने, अुपयोगमें लेने और कमसे कम समयमें ज्यादासे ज्यादा हद तक बढ़ानेकी समस्याको जल्दीसे जल्दी हल करना चाहिये । अैसा करनेमें अुसका अेकमात्र मकसद यह होना चाहिये कि वह कमसे कम खुराक, कपड़े और अपने हर नागरिकका जीवनस्तर अूँचा अुठानेवाली जरूरी चीजोंके बारेमें स्वावलम्बी बन जाय ।"

२. "पढ़ेलिखे देशभक्त हिन्दुस्तानियोंको — खास कर अूँची शिक्षा पाये हुअे अिंजिनियरों और वैज्ञानिकोंको — बिना किसी हिचकिचाहटके हिम्मतके साथ ओछे तथा परावलम्बी धन्धेके तमाम नीचे गिरानेवाले तरीकों और साज-सामानको ठुकरा देना चाहिये, जो पिछली सदी डेढ़ सदीकी लुभावनी विदेशी हुकूमतने पैदा कर दिये थे, और अपने व्यक्तिगत हितोंको हिन्दके ज्यादा बड़े हितों और दुःखी जनताके कल्याणके साथ मिला देना चाहिये ।"

३. "कामके मौजूदा स्टैण्डर्ड और तरीकों तथा कामके ब्यौरेके कानूनों और नियमोंको अिस दृष्टिसे सावधानी और सख्तीसे जाँचना निहायत जरूरी है कि वे हिन्दके आम लोगोंकी मौजूदा हालतोंके मुआफिक हैं या नहीं । आज हिन्दकी आम जनता गरीब और अपढ़ है, अुसमें शक्तिका अभाव है । और देशकी विशाल साधनसम्पत्ति यों ही पड़ी हुअी है, कोअी अुसकी फिकर लेनेवाला नहीं है — देशके होशियार और बुद्धिमान लोगोंमें लगन, सच्ची श्रद्धा और साफ तथा विशाल दृष्टिका अभाव होनेके कारण वह सम्पत्ति बिगड़ और बरबाद हो रही है ।"

४. "पक्के निश्चयके साथ आजके अिस कुचक्रसे बाहर निकलनेके लिअे ज्यादासे ज्यादा कोशिश की जानी चाहिये; अुदाहरणके लिअे :

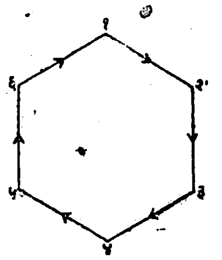

१. दिनोदिन चीजोंके भाव और रहनसहनका खर्च बढ़ता जा रहा है ।

२. मजदूरी, तनखाहें और भत्ते ज्यादासे ज्यादा बढ़ते जा रहे हैं ।

३. टैक्स दिनोदिन अूँचे होते जा रहे हैं ।

४. सच्ची दौलतके पैदा करनेवालोंकी भुखमरी और कमजोरी ज्यादा ज्यादा बढ़ती जा रही है और वे असंगठित होते जा रहे हैं ।

५. देशकी जमीन और कुदरती साधनोंकी दिनोदिन ज्यादा अुपेक्षा की जा रही है, वे बिगड़ रहे हैं और बरबाद हो रहे हैं ।

६. जीवनकी जरूरतोंकी पैदावर दिनो दिन घटती जा रही है ।

अिसके लिअे हमें थोड़ी मुद्दतके साहसभरे कामोंका अेक संकट कालका प्रोग्राम अपनाना होगा, ताकि देशकी सारी मानव-शक्ति, पशु-शक्ति, बिजलीकी शक्ति और यंत्र-शक्तिका अेक सावधानीसे बनाअी हुअी योजनाके मुताबिक होशियारीसे व्यवस्थित संचालन करके जमीन और दूसरे कुदरती साधनोंकी ज्यादा अुपेक्षा, बरबादी, बिगाड़ और नाशको रोका जा सके । यह संकट कालका प्रोग्राम आखिरमें देहातोंके पुनःसंगठन और पुनर्निर्माणके स्थायी कामोंके लिअे ठोस आधार पर बनाअी हुअी लम्बी मुद्दतकी योजनाका सुयोग्य अभिन्न अंग बन जायगा ।"

५. "खास खास महकमोंको बढ़ाकर फाजिलबाजीका शासन कायम करनेका मौजूदा झुकाव और धीरे धीरे अिन महकमोंका अेक दूसरेसे बिलकुल अलग हो जाना हिन्दकी आजकी हालतोंके लिअे ठीक नहीं है; अितना ही नहीं, वह आम लोगोंको देशभक्त और फर्ज अदा करनेवाले नागरिकोंके अनुशासनपूर्ण और स्वावलम्बी राष्ट्रके रूपमें संगठित नहीं होने देता ।"

प्रो० भागवत "जनवरी १९४९के पहले पखवारेमें संघोंके अैसे मेम्बरोंकी अेक कान्फरेन्स बुलाना चाहते हैं, जो अुनके अिन सुझावोंके महत्वको समझते हैं । कान्फरेन्सके पहले अुन घाटियोंका छोटासा दौरा किया जायगा, जिन्हें प्रो० अेस० आर० भागवतने स्थानीय विकासके कामके लिअे चुना है ।"

जो अिसमें दिलचस्पी रखते हैं, अुन्हें २३२ सदाशिवपेठ, पूना २ के पतेपर अुनसे पत्रव्यवहार करना चाहिये ।

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल मशरूवाला

घरकाममें हरिजन

अेक भाअी लिखते हैं :

"जो अस्पृश्यता निवारणकी हिमायत करते हैं, अुन्हें अपने घरके सब नौकरोंको हटाकर हरिजनोंको अिस कामके लिअे रखना चाहिये । क्योंकि अुपदेश देनेके बनिस्बत अैसे कदमका असर ज्यादा पड़ता है । अैसा होगा, तो मन्दिरके संचालकोंके विचारोंमें भी जरूर पूरापूरा फेरफार हो जायगा । और आज जो विरोधकी भावना सब जगह फैली हुअी है, वह शान्त हो जायगी । वर्ना यह साफ मालूम हो जायगा कि अस्पृश्यता निवारणके हिमायतियोंके अुपदेश और सचाअी सिर्फ ढोंग हैं ।"

मैं अिस सुझावका तो समर्थन करता हूँ, लेकिन साथ ही यह कहना जरूरी है कि मन्दिर प्रवेश और हरिजनोंको घरकामके लिअे नौकर रखनेकी बातमें कोअी जरूरी सम्बन्ध नहीं है । सच पूछा जाय तो जब हरिजन धार्मिक और सामाजिक कामोंमें सवर्ण हिन्दुओंके साथ आजादीसे मिलने-जुलने लग जायँगे, तब सम्भव है कि अुनके लिअे नौकरियाँ भी खुली हो जायँगी । शायद अिन भाअीको मालूम नहीं होगा कि पिछली सदीके आखिर तक घरकामके नौकर, भले वे हरिजन नहीं थे, निचली जातियोंके होनेके कारण अपनेको अूँची जातिके कहलवानेवाले ब्राह्मण और बनिये अुनके हाथका पानी भी नहीं पीते थे । लेकिन अब तो ये नौकर घरमें रसोअी भी बनाते और परोसते नजर आते हैं । और, ये भाअी नहीं जानते होंगे कि कुछ घरोंमें हरिजनोंको भी घरकामके लिअे नौकर रखना शुरू हो चुका है ।

बम्बअी, ५-१२-'४८

(गुजरातीसे)

હરિજનોંકે સાથ સહભોજ

ઝરિયાસે હરિજન આશ્રમ, આસનસોલકે વ્યવસ્થાપક શ્રી હરદેવ લિખતે हैं કિ તા૦ ૨૮–૧૧–'૪૮, રોજ રવિવારકો શ્રી અર્જુનદાસજી અગ્રવાલને અપને આનન્દભવનમેં કોલફીલ્ડકે ૫૦૦ હરિજનોંકો સમ્માનપૂર્વક ભોજન કરવાયા તથા સ્વયં હરિજનોંકે સાથ ભોજન કિયા । લાલા બલિરામ, તનેગા કાંગ્રેસ કાર્યકર્તા, શ્રી સ્વામી ધનગિરી બાબા, સ્થાનીય ડિ૦ એ૦ વી૦ સ્કૂલકે માસ્ટર તથા અનેક ભદ્ર પુરુષોંને આનંદકે સાથ ભેદભાવ ત્યાગકર હરિજનોંકે સાથ ભોજન કિયા । ભોજનકે બાદ બાબાજીને હરિજનોંકો ઉપદેશકે વચન સુનાયે ।

કિ૦ મશરૂવાલા

www.vinoba.in

नाअियोंसे बेगार लेना

गाँवोंमें कुम्हारोंको जो अनिवार्य बेगार करनी पड़ती है, अुसका अुल्लेख 'हरिजनसेवक'में हो चुका है। गुजरात प्रान्तिक नाअी-ब्राह्मण सभाकी बेगार-निवारण समितिके मंत्री श्री पुरुषोत्तम पारेखकी ओरसे नीचे दिया हुआ पत्र आया है। वह नाअियोंको जो बेगार करनी पड़ती है, अुसके सम्बन्धमें है। यह मेरे अुस पत्रके खुलासेमें आया है, जो मैंने थोड़े दिन पहले आये हुअे अेक पत्रके सम्बन्धमें अुनसे माँगा था। ये माँगें बिलकुल ठीक मालूम होती हैं। अुन्हें माननेमें किसी तरहकी मुश्किल न होनी चाहिये।

"गुजरातके गाँवोंमें जो सरकारी बेगार देनी पड़ती है, अुसके सिलसिलेमें जिन नामधारी 'वसवायों' (गाँवमें मुफ्त जमीन देकर बसाये हुअे कारीगरों) का अुल्लेख किया गया है, अुनमें विशेष करके दो ही जातियोंको अनिवार्य बेगारकी तकलीफ है। अेक है कुम्हार और दूसरी नाअी। करीब करीब सभी जगह कुम्हारको पानी भरनेकी अनिवार्य बेगार करनी पड़ती है। और नाअीको दिनभर जो बेअिज्जतीभरी बेगार देनी पड़ती है, अुसका वर्णन करते हुअे कलम काँपती है।

"सवेरे अुठते बराबर अुसे अधिकारीकी सेवा-चाकरीमें हाजिर होना पड़ता है। वह अधिकारीको दातुन पानी कराके, अुसके लिअे दूध लाता है, चाय बनाता है और पिलाता है। फिर बैठक और अहातेकी सफाअी करता है। बादमें अधिकारीकी मालिश करके अुसे नहलाता है और अुसके कपड़े धोता है। अुसकी रसोअीके लिअे बाजारसे सामान लाता है। अुसके जूठे बरतन साफ करता है। तीन बजते ही वह फिर चायकी तैयारी करता है, दूध-शक्कर लाता है, चाय बनाकर अुसे पिलाता है और चायके बरतन साफ करके अधिकारीके सोनेके लिअे गाँवमेंसे खाट-गोदड़े-बिस्तर अिकट्ठे करता है, और अुन्हें बिछाता है। फिर शामकी रसोअीका सामान लाता है, जूठे बरतन माँजता है और बैठककी दिया-बत्ती करता है। जब अधिकारी लेट जाता है, तो अुसे पाँव दबानेके लिअे कहा जाता है। और यह सब काम करके वह रातके बारह बजे कहीं घर आता है। यह थोड़ेमें अुसका काम बताया गया है। ज्यादा लिखनेमें शरम आती है। अिस तरह गुजरातके बड़े देशीराज्योंमें गाँवोंके अधिकारियोंकी बेगारका जुल्म मूक नाअी जनता पर सैकड़ों वर्षोंसे हो रहा है। अिसके बदलेमें अुसे वार्षिक ८ से १० रुपये तक पगार मिलती है। गाँवमें कुम्हार और नाअीके दस दस घर हों या पन्द्रह पन्द्रह, अुनमेंसे हरअेकके सिर बारी बारीसे यह बेगारका असह्य जुल्म आता है। सामन्त-युगकी यह गुलामीकी प्रथा आज भी जिन्दी है। हमारी कांग्रेसके सूत्रधार और कब तक अिसको चलने देंगे?

"मैंने आपको लिखा था कि 'गाँवमें अेक नाअीको तनखाह देकर नौकर रखा जाय। अुसी तरह सुतार, लुहार, कुम्हार वगैरा भी रखे जायँ।' आपने अुसका अर्थ पूछा, यह अच्छा किया। लुहार और सुतारकी बेगार सरकारी बैठकमें नहीं लगती। अुन्हें तो जब गाँव बसाये गये थे, तभी बसाया गया था। कारण कि गाँवकी किसान प्रजाके अुपयोगके लिअे यह कारीगर वर्ग जरूरी है और अुसे बसाना ही चाहिये। अिसलिअे अुनकी वे जमीनें अुनकी जायदाद ही समझी जायँगी।

"नाअी और कुम्हारके सिर बेगार है। कुम्हारसे मटके मुफ्तमें लिये जाते हैं और पानी भरवाया जाता है। अिसी तरह नाअीसे हजामत बनवानेके अलावा अूपर बताये हुअे काम और पैर दबवानेका काम भी अनिवार्य रूपमें लिया जाता है। ये सब काम रोज नकदी रकम देकर भी कराये जा सकते हैं। और अुसी तरह समयके मुताबिक रोजी तय कर देनेसे अगर कोअी अुन्हें करनेके लिअे खुशीसे तैयार हो — फिर वह किसी भी जातिका आदमी हो, चाहे नाअी हो या कुम्हार हो, धाराला हो या वाघरी हो, बजानिया हो या माली हो, कुनबी हो या ब्राह्मण हो — तो किसीको अेतराज न होगा। परन्तु यह अनिवार्य बेगार अिन दो जातियोंसे जबरदस्ती ली जाती है। अुसे हटानेके लिअे बहुतसे आन्दोलन किये गये हैं। अब वह बन्द होनी चाहिये। अितना ही नहीं बल्कि अैसा कायदा — प्रबन्ध होना चाहिये कि जो कोअी जबरन् यह बेगार ले, अुसे सजा दी जाय।

"सैकड़ों वर्षों पहले जब ये देहात बसाये गये थे, तब अिन देहातोंके आर्थिक और सामाजिक व्यवहारके लिअे अिन जातियोंको बसाया गया था। और अिसीलिअे अुनका आजीविकाके लिअे गाँवकी छोटी जमीनें अुन्हें वंशपरम्पराके लिअे मुफ्त दे दी गयी थीं। वे अभी भी अुनके नाम पर हैं। अुन पर लगान नहीं लिया जाता। ये जातियाँ आज भी गाँवोंमें बसती हैं और अुनके आर्थिक व्यवहारके लिअे अुपयोगी हैं। लेकिन यह माना जाता है कि यह अनिवार्य बेगार तो ब्रिटिश शासनकालमें ही दाखिल हुअी है। अिसलिअे बेगारके साथ अुनकी अिनामकी जमीनोंकी मालिकीका कोअी सम्बन्ध नहीं है। अब यदि वे अिन जमीनोंके बदलेमें बेगार देनेसे अिन्कार करें और अिसलिअे अिन जमीनोंका साधारण जमीनोंकी तरह लगान देना मंजूर करें, और यदि अिस अनिवार्य गुलामीको हटानेके बदलेमें सरकारको वह लेना ठीक लगे, तो वे लगान देनेमें भी खुश होंगे।

"अिस सम्बन्धमें १५–९–'४८को मोरिया गाँवमें साठगढ़वाड़ा नाअी-ब्राह्मण सभाके आश्रयमें साठगढ़वाड़ा जूथके साठ विभागके बीस गाँवके नाअियोंकी अेक आम सभा हुअी थी। अुसने जो प्रस्ताव पास किये, अुन पर मैं आपका ध्यान खींचता हूँ:

प्रस्ताव १ — गुजरात प्रान्तीय नाअी-ब्राह्मण सभा बेगारकी प्रथा अुठानेके लिअे वर्षोंसे प्रचण्ड आन्दोलन चला रही है। अब जब कि सारा देश गुलामीसे छूट गया है, यह सभा अिस निर्णय पर आनेका ठहराव करती है कि हमारा अपमान करनेवाली सरकारी बैठककी बेगारसे — गुलामीसे, जो स्थानीय और दूसरे अधिकारी हमारी मर्जीके खिलाफ हमसे लेते हैं, अिस हलकेके और बनासकांठा, मुमनवास, मोरिया, धनाली, सीसराणा, महीकांठा तथा दांता स्टेटके १९ गाँववाले नाअी संवत २००५ कार्तिक सुदी १ से मुक्त हो जायँ। और अिनामी जमीनवालोंकी जमीनका लगान तय करवा लिया जाय। अितना ही नहीं, सभाकी मंजूरीके बिना कोअी भी अमलदारको लेखी या जबानी किसी भी तरहका जवाब न दे।

प्रस्ताव २ — गुजरात और बम्बअी प्रान्तसे मिली हुअी रियासतोंके गावोंकी बेगारके सम्बन्धमें हमारी गुजरात प्रान्तीय नाअी-ब्राह्मण सभाकी बेगार-निवारण समितिने ता. ८–९–'४८ को जो अर्जी बम्बअीके मालमंत्री श्री मोरारजी देसाअीसे की थी, अुसमें लिखे मुताबिक जिन जिन गाँवोंके नाअियोंकी बेगार करनेकी अिच्छा न हो, अुनकी अिनामी जमीनोंका सरकारी लगान तय करके अुन्हें बेगारके जुल्मसे मुक्त किया जाय। अिस बातका फैसला करनेके लिअे यह सभा श्री मालमन्त्री और गु० प्रा० कमेटीके नेता श्री लालाकाकासे नम्रताके साथ विनन्ती करती है।

प्रस्ताव ४ — यह सभा ठहराती है कि समाजमें हजामत बनानेके सिवा और शादीके वक्त मशाल अुठानेके सिवा दूसरे कोअी भी काम न किये जायँ। जातिमें शादीके वक्त जो गालियाँ गायी जाती हैं, वे आजसे बन्द हो जानी चाहियें।

बम्बअी ९–११–'४८ किशोरलाल मशरूवाला

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

भक्त सुन्दरदास जयन्ती

[ता० ९–११–'४८ को सुन्दरदास जयन्ती अुत्सवके निमित्त नारायण (जयपुर) में दिया हुआ पूज्य विनोबाका भाषण। — दा० मूं०]

आप लोगोंने मुझे बुलाया और मैं भी आ गया। पर अक्सर अैसे समाजमें मैं कम गया हूँ। कम क्यों गया और यहाँ क्यों आ गया, अिसका कारण है। वह यह कि अैसे सम्प्रदायोंमें कुछ न कुछ संकुचितता आ ही जाती है। जैसा हमने अभी सुना है, दादूजीकी अिच्छा नहीं थी कि सम्प्रदाय बने, परन्तु वह बन गया। अगर बन गया है तो तोड़ा भी जा सकता है। तोड़ना ज्ञान परंपराको नहीं, संकुचित अर्थवाले सम्प्रदायको है। सम्प्रदायका अेक अूँचा अर्थ यह है कि जो ज्ञान हमें गुरुसे मिला, अुसे हम सबको दें। अिस अर्थमें सम्प्रदाय चलेगा, किन्तु गुरुके नामसे नहीं। गुरुको अगर हमने देह रूप माना तो हमने गुरुसे ज्ञान नहीं, अज्ञान ही पाया। गुरुने तो हमें समझाया है कि हम देह रूप नहीं, आत्मा रूप हैं। अिसलिअे गुरुके नामसे सम्प्रदाय नहीं बन सकता। लेकिन जब बन ही गया, तो क्या किया जाय? मैं सलाह दूँगा कि गुरुका नाम बाहर प्रकट करनेकी जरूरत नहीं, अुसे मनमें रखिये। और बगैर किसी नामके बातोंसे नहीं बल्कि अपने कामोंसे समाजमें अिस तरह घुलमिल जाअिये, जैसे दूधमें शकर। दूध पीनेवाला जो भी यह नहीं कहता कि मैं दूध-शकर पी रहा हूँ, वह सिर्फ दूधका ही नाम लेता है, फिर भी शकर तो अपना काम करती ही है। अगर हममें शकरका गुण है, तो हम समाजमें अैसे विलीन हो जायँगे, जैसे समुद्रमें नदी या सिन्धुमें बिन्दु। सिन्धुमें विलीन होने पर बिन्दु स्वयं ही सिन्धु हो जाता है, बिन्दु नहीं रहता।

युक्लिडका सिद्धान्त हम युक्लिडके नामसे नहीं, सिद्धान्तके नामसे ही चलाते हैं। अिसलिअे सम्प्रदायोंको तोड़नेका यही अुत्तम तरीका है कि गुरुकी ज्ञान परंपराको चलाया जाय, अुनके नामको नहीं। अगर वह ज्ञान हमारा नहीं हो गया है, तो अुसे हमें किसीको देना भी नहीं है। किन्तु अगर वह ज्ञान हममें रच गया है, तो हमारा ही हो गया है।

मैं अक्सर अैसे अुत्सवोंमें क्यों नहीं जाता, अिसका कारण मैंने बतलाया। अब यहाँ क्यों आया यह भी बतला दूँ। सुन्दरदासजी केवल दादू पन्थवालोंके ही नहीं हैं। 'रहो या विनसो देह' अैसी जिनकी व्यापक और अनासक्त बुद्धि थी, अुनके आकर्षणसे मैं यहाँ आया हूँ।

सुन्दरदासजी हमें अेक विचार, अेक आदर्श, दे गये हैं। वह विचार, वह आदर्श जितना आपका है, अुतना ही मेरा भी है। अुस विचारसे सहानुभूति रखनेके नाते भी मैं यहाँ आ गया हूँ।

अब यह प्रश्न है कि हमें करना क्या है? सुन्दरदासजीकी जयन्ती तो हो चुकी। अुन्होंने जय हासिल कर ली। अब क्या चन्द लोग अिकट्ठे होकर कुछ तमाशा करें? तमाशा तो बहुत किया जा सकता है। हमें तो सुन्दरदासजीके विचार समाजको देने चाहियें।

आप देखते हैं कि स्वराज्य मिल गया है। किन्तु अुसकी छवि (रोशनी), अुसकी छाया, और अुसका आनन्द तो कहीं नहीं है। कारण यह है कि हमारा स्वराज्य तो वैसा ही होगा, जैसा हमारा 'स्व' होगा। अिसलिअे यदि स्वराज्यका आनन्द लूटना है, तो 'स्व' को परिशुद्ध करनेकी जरूरत है। लेकिन लोगोंको 'स्व' की फिक्र नहीं, 'राज्य' की फिक्र है। अितनी बड़ी अहिंसाकी लड़ाअीके बाद भी देशमें आज कितनी झूठ चलती है? जिस राष्ट्रका व्यापार असत्य पर चलता हो, अुसका शील खतम हुआ समझना चाहिये। सुन्दरदासजीने अैसी शीलको सँवारनेकी बात कही है। जिस तरह शीलके बारेमें कहा है, अुसी तरह सन्तोषके बारेमें भी कहा है। हमें समाजसे अुतना ही लेना चाहिये, जितना शरीर धारण करनेके लिअे आवश्यक है। पर आजकल तो दूसरोंको लूटनेकी ही कोशिश चलती है; और लूटनेवाला लूटमें सफल होने पर भगवानकी कृपा महसूस करता है, और सत्यनारायणकी कथा भी करवाता है। भगवान कोअी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट तो है नहीं, जो अुसे खुश करनेकी अिस तरह कोशिश की जाय। जहाँ भगवानकी प्रसन्नताका नाप पैसेमें होता है, वहाँ राष्ट्र कितना गिर गया है यह हमें खुद सोचना है। ये भक्त लोग यह मानते हैं कि भगवानको खुश करनेसे भोग मिलेगा। अैसे भक्तोंसे नास्तिक अच्छे।

आजकलके नवयुवकोंके बारेमें यह शिकायत रहती है कि वे भगवानको नहीं मानते। अिसकी जिम्मेदारी तो भक्तिमार्गियों पर है, जिन्होंने भगवानकी कीमत कम ही नहीं की, अुलट कर रख दी है। श्रीमान लोग समझते आये हैं कि वे भक्तिमार्गका काफी प्रचार करते हैं। आरती और प्रसादके ठाटबाटसे वे यह दिखाते हैं कि भगवान अुन पर प्रसन्न हुआ है। वे लक्ष्मीपतिके रूपमें ही विष्णुको पहचानते हैं। विष्णु अगर कल विरक्त हो जाय और लक्ष्मीको त्याग दे, तो अिन्हें फिर विष्णुकी आवश्यकता नहीं।

अिसलिअे सुन्दरदासजीने सन्तोषकी जो बात कही है, अुस पर अमल करना चाहिये। वेदोंमें कहा गया है 'कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व, बहुमन्यमाना'। खेतीमें शायद ज्यादा धन न मिले, कम मिले, लेकिन वही विष्णुकी सच्ची लक्ष्मी है। लक्ष्मी तो मेहनत करनेसे पैदा होती है। अिस तरहकी मेहनत मजदूरीसे जो मिले, अुसीसे सन्तोष मानना चाहिये। यही सुन्दरदासजीने गाया है।

अेक बात और है हरिनामकी। हरिनाम तो अेक संकल्प है। संकल्पका बल महान होता है। संकल्पके द्वारा ही आत्माकी अनुभूति होती है। 'प्राये प्राये जिगीवांसः स्याम।' जिसके पास अपने संकल्पका बल है, अुसके कोशमें 'हार' शब्द है ही नहीं। अुसकी हमेशा जीत ही रहती है। मैं जो चाहूँगा वही मेरे लिअे होगा, यह बल संकल्पमें होता है। वह रोना जानता ही नहीं। आपत्ति भी अुसके लिअे कसौटी होती है, और सम्पत्ति भी। सुख और दुःख दोनों भाअी हैं। लेना हो तो दोनोंको और छोड़ना भी हो तो दोनोंको। खतरेमें पड़नेवाले मित्रको हम सावधान करते हैं, सुखमें पड़े हुअे मित्रको भी अुसी तरह सावधान करनेकी जरूरत है। गाड़ीको अुतार और चढ़ाव दोनों जगह धोखा होता है। धोखा सिर्फ समतल भूमि पर ही नहीं होता। हमारा जीवन-शकट भी समतल पर चलना चाहिये। हरिनाममें अैसी शक्ति है। अिसलिअे सन्तोंने कहा है कि शुभ नामका प्रचार करो, सोऽहं बोलो। देहमें दोष हो सकते हैं। परन्तु जैसे चरखेको दुरुस्त करनेके लिअे हम बढ़अीकी मदद ले लेते हैं, अुसी तरह देह रूपी चरखेको दुरुस्त करनेके लिअे सन्तोंकी मदद मैं ले लूँगा। परन्तु मैं पहचानूँगा कि मैं वह हूँ, जिसमें दोष नहीं है। शरीरकी कैसी भी बुरी दशा हो, मैं बुरा नहीं हो सकता। यह सब समझानेकी शक्ति हरिनाममें है। वह कहता है कि हम अविछिन्न हैं, अखण्ड हैं।

बस, सन्तोष और हरिनामको शील समझो। शकरकी तरह समाजमें घुलमिल जाओ। गुरुका नाम छोड़ो, केवल भगवानका नाम चलाओ।

विषय-सूची

		पृष्ठ
अधिकारियोंके लिअे सवाल	… किशोरलाल मशरूवाला	३४९
मिट्टीके घर — ४	… मॉरिस फिडमॅन	३५०
ओहदेका नशा	… जी० अेम०	३५०
तामिलनाडमें गांधीजीके अुपदेशोंका अमल	…	३५१
अेकताके लिअे	… मीराबहन	३५२
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	… किशोरलाल मशरूवाला	३५२
मेवोंके सवालका फैसला	… दा० मूं०	३५३
हिन्दकी आजादीकी रक्षाके लिअे कुछ सुझाव	… किशोरलाल मशरूवाला	३५४
नाभियोंसे बेगार लेना	… किशोरलाल मशरूवाला	३५५
भक्त सुन्दरदास जयन्ती	… दा० मूं०	३५६
टिप्पणियाँ		
खादीधारियोंके कपड़ेके कूपन	… कि० मशरूवाला	३४९
जन्मदिन	… च० राजगोपालाचार्य	३५२
घरकाममें हरिजन	… कि० मशरूवाला	३५४
हरिजनोंके साथ सहभोज	… कि० मशरूवाला	३५४

www.vinoba.in